राग-विराग

राग-विराग

(मैथिली कविता संग्रह)

डॉ. शिव कुमार प्रसाद

पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

RAG-VIRAG

Anthology of Maithili poems by Dr. Sheo Kumar Prasad

ISBN: 978-93-93135-80-3
दाम: 290/- (भा.रु.)
© लेखक (डॉ. शिव कुमार प्रसाद)
पहिल संस्करण: 2024

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: +91 62006 35563; +91 99316 54742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण चित्र: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल) बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। सत्त्वाधिकारी केर लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

समर्पण

मिथिलाक भौगोलिक, मैथिलीक भाषिक अन्तर्कलहक बिडम्बना, मैथिल समाजमे गुटबाजी, वर्चस्ववादी, दाव-पेंच आ वैयक्तिक स्वार्थक कारणेँ भेँट चढ़ैत मैथिली मायकेँ भरल हृदयसँ ई संग्रह समर्पित अछि।

- विमल

(शिव कुमार प्रसाद)

भूमिका

मनुक्ख, माल, चिड़ै-चुनमुन आकि साँप-घरियारोक तँ जिनगीए होइत छैक मुदा सभक जिनगीक रूप एकरंग नहि होइत छैक। मनुक्ख सभसँ बुधियार। अद्भुत संस्कार सम्पन्न। खाद्य-अखाद्य, नीक-अधलाहक नीर-क्षीर विवेकी। अनकर सुख-दुखसँ अप्पन सुख-दुखक अनुभव केनिहार। भगवानक प्रति अटूट श्रद्धा रखनिहार। पूजा-पाठ, जप-तप, योग-ध्यान, भजन-कीर्त्तन, व्रत-उपवास, यज्ञ-याज्ञमे सदति सलग्न। इसरक अनुकम्पासँ दिन-दुगुना राति चौगुना प्रगति करैत आब समुद्र-पहाड़कँ के कहए जे चाँन तक पहुँच चुकल अछि। जिनगीक नव गति आ नव तालक संग आगू बढ़ल जा रहल छथि। नाना रंगक परिधान, जिह्वा लेल नाना रस, नाना पाक आ नाना प्रकारक सामिस-निरामिस भोजनक भण्डार पाबि आर आगाँ बढ़ि रहल छथि। आइ मनुक्ख अप्पन उपलब्धि पाबि अप्पन कृत्य सभपर मुग्ध छथि। आ हेबाको चाहिऐन। अथक प्रयासे ई उपलब्धि पौलैथ अछि।

हमहूँ मनुक्खे छी। एहि उपलब्धिक हमहूँ भोक्ता छी। मुदा मनुक्खक 'मन' सदति दौड़ैत रहैत छैक। छोट-छोट उपलब्धि, तहिना छोट-छोट बातक कारणेँ मनुक्ख कखनहुँ किनकहु प्रति अनुराग तँ

किनकहुँ प्रति विरागक अनुभूतिसँ आच्छादित होइत रहैत छथि। 'राग-विराग' संग्रहक सभ कविता मनुक्खक नीक आ अधलाह वा सुख-दुखक यथार्थ-परक अनुभूतिक अभिव्यक्ति अछि। मनुक्ख रूपेँ भोगल, देखल मनुक्खक जिनगी, प्राकृतिक प्रकोप, ओकर कारणेँ अह्लादित आ मर्माहित होइत मनुक्खक मर्यादित-अमर्यादित कृत्य सदति झकझोरैत रहल अछि। ओहि प्रचण्ड भावातिरेकमे किछु लिखवाक हम प्रयास कएल। निश्चित रूपेँ शब्दमे शक्ति होइछ मुदा मनुक्ख आकि मनुक्खसँ इतर जिनगीक भयावह बिडम्बनाकेँ यथार्थ चित्र घिचवाकाल शब्दो चुप भऽ जाइछ। तैयो हम एहि संग्रहमे सामाजिक ओ पारिवारिक स्तरपर मनुक्खक जिनगीक साँच, प्राकृतिक विभिषिका, मनुक्खक विवशता आ ओहि विवशताकेँ खिल्ली उड़बैत आधुनिक धनपति, नेता, सरकारी अमला आ कर्मचारीक बेवहारक विद्रुपताक रेखांकन करबाक प्रयास केलहुँ हेँ। ओना, एहिसँ पहिलुका रचनासभमे एहि 'फार्मेलिटी'सँ हम अपनाकेँ फराक रखने रही मुदा प्रस्तुत पोथीमे जे कविता वा अकविता छपि रहल रहल अछि ओ कल्पना नहि यथार्थ अछि, जिनगीक आलोचना अछि।

इति शुभम्

- शिव कुमार प्रसाद

सिमरा, झंझारपुर

25 अगस्त, 2024

अनुक्रम

गणपति/13
पूजा/14
तोड़ि ले सिनेह आइ/15
स्मरण/17
अपनहि करी उपाय/18
तगेदा/20
जिनगीक पहेली/21
विवेक/22
पेंच/23
सहज जिनगी/24
हे भगवती/25
मनक हाट/26
साँच/27
जिनगीक कियारी/28
मैथिली/29
मनक बात/30
फाँस/31
बेटी/32
मनक जोड़/33

बिलहैत दरमाहा/34
राग- 01/35
दरद/36
लति/37
कहा-सुनी/38
पैघ लोक/39
जनमभूमि/41
दुखहरणी/43
कोना छी?/45
मिथिला/46
असमयक बरखा/48
प्रपंच/50
सुरुजदेव/52
टिटही टिहैक गेल/53
सुहासिनी/54
लोके सन लोक/55
गाछ छी छतनार/57
उमेर/58
जिद जुनि करी/61
माए/63
शिक्षाक संसार/64
बात तँ बुझियौ/66

चौरचन/68
आखिरी जन/69
छाँहक बिसवास/70
अगम बाट/72
राग-विराग/73
पूजाक महत्ता/74
सिनेहक आँगुर/75
दाँत बीच जीभे सन/76
हे हरि चरण कमल बलिहारी/77
मटरा माय/78
बाढ़ि- 01/80
बाढ़ि- 02/81
बाढ़ि- 03/83
बाढ़ि- 04/84
अपना लेल/85
अन्तर्यामी मन/86
सपना/87
'स्व'/88
अपन मैथिली/89
रितैत जिनगी/90
माँ/91
अपन आँगन/92

गुलमोहर/94
छिड़ियाइत मर्रा/95
छतनार गाछ/96
नवका शिक्षा- 01/97
नवारम्भ/99
हमरामे हमर गाम- 1/100
हमरामे हमर गाम- 2/103
करी कोन योग/106
गाय/107
राग- 02/109
मनक अकास/110
मकर जाल/112
छोट-पैघ/113
जिनगी- 01/114
जिनगी- 02/115
नवका शिक्षा/117
बहिन/119
कविता/121
कहू हम झूठ कहै छी?/122

गणपति

प्रथम पुज्य छथि गणपति बाबा
पुजाइ छथि नित गणपति बाबा।
सदिखन लड्डू भोग लगावथि
परम पुज्य छथि गणपति बाबा।
लोक वेद केर नहि छनि चिंता
लम्बोदर छथि गणपति बाबा।
बाप पित्तीकेर कठिन तपस्याक
फल पबैत छथि गणपति बाबा।
मोदक प्रिय मनोहर छथि ओ
मंगल करता गणपति बाबा। ❑

पूजा

किनको नहि पलखति
करत कोना
दिन रातिक पावनि पूजाक विधान
एतीह माय सत्कार कोना करबैन
हुनक पूजा अर्चनक नहि अछि समान।
पण्डाल बनल मनोहर कतेक
आब आनब कतयसँ दुबि धान
भगवती विराजथि हँस पीठ
अनुपम श्रृंगारसँ सजल धाम
कहुना कोनो पंडित खोजि खाजि
फूल अक्षत दऽ केलैथ काम
आब ढ़ोंग दिखेवाक समय आएल
सब अपनेमे छथि फिरेसान।
हे माँ,
हरु हमर अंध ज्ञान। ❑

तोड़ि ले सिनेह आइ

नुनूक दुलारसँ
बहिनक मनुहारसँ
सखी बहिनपा
खढ़- खड़िहानसँ
आँगन दलानसँ
चुल्हि-चिनवारसँ
माटि आ गोबरक
ढ़ौरल देवालसँ
काकीकेर छातीक
हहरैत सिरहानसँ
भौजक अखिंयासैत
ननैदक सनोमानसँ
भाइकेर दुलार फेर
बापक सिनेहसँ
मायकेर फाटैत
छातीकेर भाथी
झहरैत मेघसन
आँखिक टघारसँ।
अदौसँ टूटैत रहलै
अहिना सिनेह सूत

बेटी जे भेलै ओकर
घर कहाँ बनलै
जनमसँ बापक घर
विवाह बाद वरक घर
बेटाक घर संगे
लेबैत साटैत टाट जकाँ
टाटीये पर जेतै। ❑

स्मरण

नहि कहबौ किछु
कहिकेँ की हएत
करैत स्मरण तोरा
बजेलियौ कतेक काल
फूल, तील, घी, मौध,
दूधक दइ धार
नामों लऽ बजेलियौ
मुदा एलें कहाँ लग
अपने चलि गेलें
कहाँ कहलें कोनो बात
कखनहुँ बड़ मोन पड़ै छें!! ❑

अपनहि करी उपाय

नहि अछि मुक्ति
मानव दानव सँ
किनका लग
हम जाय
पुरुष जनानी
ऊँच नीच सभ
अपने लेल
करथि उपाय।
अपनहि लेल
सभ बाट बनाबथि
अनका पर धरि पैर
पैरक तर सँ
तकैत अकिंचन
रहलहुँ सदैत
निरुपाय।
जिनका सेवल
गाछ बुझि हम
केलनि ओ एकहि काम
अपन बेगरता
देखैत रहलाह

हमरा बेर
परथि वेराम
परल छी जुग जुग
सँ निरुपाय।
आब अपनहि करी उपाय। ❑

तगेदा

बहुत देखल बहुत परखल
सहोदर आन नहि भेटल।
कहब छै सहज कहबा लेल
सहज जिनगी नहि भेटल।
कम्बल होएत गेल भारी
उठेनहार बोझ नहि भेटल।
चलूने बाँटि ली किछु काज
कहनाहर कोइ नहि भेटल।
तगेदा छै उमेरक बहुत
चुकेनहार कोइ नहि भेटल। ❑

जिनगीक पहेली

बहुत छै बात जिनगीकेँ
कतेक विस्तारमे हम जाए।
चरणयुग चापिकेँ बैठल
कोना सुख छोड़िकेँ हम जाय।
हवा छै तीर सन बेधैत
नगर कोना छोड़िकेँ हम जाय।
भले पाथरकेँ छै मुखड़ा
कोना ई छोड़िकेँ हम जाय।
चश्मा पहिर लेलों नगरक
घुमि हम गाम कोना जाय।
एतए छै मान जिनगीकेँ
छोड़ि ई मान कोना हम जाय। ❑

विवेक

हम जुआन नहि छी
बूढ़ो नहि
दौड़ैत टरेन कि बसमे
चढ़ि सकैत छी
मुदा चढ़ैत नहि छी।
हम जुआन जकाँ
कलौ, पनपियाय सेहो
कऽ सकैत छी मुदा
करैत नहि छी।
हमहुँ तोड़िकऽ रीति- नीति
बाजि सकैत छी कुबोल
कऽ सकैत छी हुड़दंग
मुदा करैत नहि छी।
जिनगीमे बहुत देखलहुँ
ऊँच-नीच, लम्फ- लम्फा
देखलहुँ अवसर आ अवसरवादी
झूठ-फरेब, कहर-कुच्चा, भपडाह
नहि केलहुँ नहि पचल
तें नहि केलहुँ बुइध-बियाह।
अपचकेँ पचबैत जिवैत छी
समयकेँ समाहैत रीतै छी। ❑

पेंच

बहुत छै पेंच जिनगी मे
भल मानुष बनि देखियौ
जे संग छथि अपेक्षित
वएह लहैब करबै छथि।
कनकसँ मोह सभ राखै
वएह भोकसी झोंकाबै छै।
रहत जँ पैघ बौगली तऽ
वएह जानो मरबाबै छै।
जारैन गोइठासँ हेतै की
नव तुरिया सभ बजै छथि
माघक ठाढ़ खसला पर
वएह अगियासी ताकै छथि? ❑

सहज जिनगी

जतरेमे अन्तिम दिन बितल
बितल पहिल दिन तहिना
अहिना जिनगी बीत जाएत छै
अहिना बितैत छै महिना।
हँसी-खुशी दुख- दरद सेहंता
रहतै सालक-साल
जिनगी छै तऽ रहबे करतै
नीक-बेजाए भरि साल।
समय विशेष परिवेशक संगे
जीबैत रही सानन्द
साधन- साध्यकेँ साधैत सदिखन
रहैछै भव आनन्द।
बिना कारणे किनकहु आदर
वा किनकहु करब अनादर
किएक करब भपडाह
किएक कहब हम किनको सागर।
सहज जिनगी जीयब नहि छै
बाजब छै असान
सहज भए जँ जीबि ली तऽ
करब-कहब समान। ❑

हे भगवती

तोड़ि पहाड़ बनाबैत समतल
जोतै भूमि किसान
बाँग, जनेर, अनार उपजाबै
पाकल लाल लताम।
नेबो, मौसमीक देखलहुँ खेती
कुसियारसँ भरल खेत
जीबहु मराठा किसान भाइ
जिविकाक कायल संधान।
आम, जाम, कटहर सन बेखक
छैक कमी एहिठाम
मुदा नीम अछि पोषल-पालल
मिथिलाक जेना चतरल आम।
घुमलहुँ कत्ताक कोस
ने भेटल कतहु जेबी कतरा
भरि राति बितेलहुँ सुतल किछु नहि,
चोरेलक चोर उचक्का।
आबि रहल छी गाम बाटमे
बाँचल रही हे भगवती
अहीं कृपा करब वा
करती माँ सरसती। ❑

मनक हाट

मनहि मन सोंचैत
नीक बेजाए
नव- पुरान
सुख- दुख
गरीबी-अमीरी
टुटैत- जुड़ैत
मनक घर-आँगन
सुनैत नीक-बेजाए
जीबइत छी सदैत
संतोषक औषैध सँ
इहो एकटा जिनगीए छै।
उमेरक उतार पर
अँखुआइत जिनगी सँ
एखन धरि
पोषैत-पालैत बाल-बच्चाकेँ
हँटैत -दबारैत
की छूटल की भेटल
कतेक लेखा राखी? ❑

साँच

साँचो मनमे अछि बहुत
अगिआएल पाथर
केकरहु छुएतै जौं
फोंके ने हेतै
मन मारि बैठल छी
किनका की कहियैन
बुझनुक जे कहबैन तऽ
झुठ्ठे ने हेतै? ❑

जिनगीक कियारी

गहमुक कियारी सन
जिनगी बनैबतियै जँ
जिनगीक कियारियो
ओहने हरियर रहितै
मुदा कहाँ असान छै जिनगीक बाट
बनलो कियारीक पानि
अपनहि संग बहा दइ छै।
कखनहुँ बात तऽ
कखनहुँ बतंगर
कखनहुँ छोट- पैघ
केर झगड़ा,
घिरनी नाच-नचा दइ छै।
तहिना नचैत नेनपन
हँसैत जुआनी
झुकैत विवशता
कियारिये मेटा दइ छै। ❑

मैथिली

कखनहुँ अपना लेल
कखनहुँ परिवार लेल
कखनहुँ साहित्य तऽ
लोक, देश, जहान लेल
रहैत छी अपसियाँत
जीबिका हमर चाकरी।
नीक या खराप कही
सेवा वा लोभ कही
मिथिलीक बेटा छी
माय हमर मैथिली।
मैथिलीक सेवा मे
लागल छी तहिया सँ
अझुका लिखनाहर सभक
जनमो ने भेल हेतैन।
भाषाक सेवा करैत
हम जिनगी बिताबै छी
मैथिलीमे लिखि पढ़ि
किनकर हक छिनै छी? ❑

मनक बात

कहाँ रुकलौं अहाँ पुरणी
हिया झकझोरि रऽहल छी।
जखनसँ एलै समदिया तार
पढ़ि मन मारि बैठल छी।
तकै छी बाट दिस कखनहुँ
तऽ कखनहुँ घुमि आबै छी
कोना बितत समय पुरणी
किएक अहाँ लाथ केने छी।
बुझै छी बात अहाँ मनकेँ
बुझै छी काम केर बोजहा
अछि जँ नेह तऽ बुझबै
किएक हम जोर देने छी।
कहाँ रुकलौं अहाँ पुरनी
हिया झकझोरि रऽहल छी। ❑

फाँस

पैंख टुटल चिड़ै सन
छटपटाइत मन
उबरऽ कैँ आश मे
भेल अपसियाँत देखू
बाँझल अछि फांस मे।
नहि जानि कखन
काल सन हाथ कोन
बढ़ि के लपैक लेत
मरि जेते सभटा
मनोरथ उफांट मे।
धक धक करै छाती
जेना लोहराक भाथी
फाटि जेतै छाती जनु
अही उपराचौल मे।
मुट्ठीमे कहीं बन्हले
ने रहि जाय सांसक तानी
रखले राखल घुना गेलै
जेना सभ किछु दलान मे। ❑

बेटी

तोँ जे नहि रहितें
सिंगार कोना होएतै
घर, अँगना, दुआर कोना
खिल-खिलाइत रहितै।
जहियासँ तोँ एलैं
आतमा जुड़ेलें
सून हमर अँगना केँ
सिंगरहार बनि सजेलें
तोरा बिन अँगना हमर
सुन्ने ने रहितै।
मायकेर कोखिकेँ
सनाथ तुहीं केलहिन
बेटा बलु किछु हौउ
वरदान तुहीं भेलहिन
तोरा बिनु अँगनामे
बेदी कोना गरितै?
हमर तोँ कोइली
कुहकै छें सदिखन
तोरेसँ भोर होएछै
अँगना दुआर पर
गेलापर अँगना सँ
ई सुन्ने ने हेतै। ❑

मनक जोड़

जाति ने छोड़ब
जिद्द ने छोड़ब
महत्तताक परीधि ने छोड़ब
बिन कोनो गुणकेँ
पद-प्रतिष्ठा
अनकर हिस्सा
हड़पब नहि छोड़ब
कखनहुँ कोशी
कखनहुँ कमला
कखनहुँ बागमती सँ
सिहायब।
चननचूर, पाखरि-पिच्चैर वा
बासमती, नन्हियाँ, कन्टिरबी,
मालभोग, सतरिया, जसबा,
कतरनीक सुन्नर हौउ चूड़ा,
सभकेँ अलग-अलग जँ करबै
कहियो मन केँ होएत की जोड़ल? ❑

बिलहैत दरमाहा

पलखति कहाँ अछि
अपन मुँह देखी
हुनकहि मुँह देखि सुनि
जिनगी चलै ये।
शरमे भरमे जँ जीबि
ली जिनगी
बुझयो जे जिनगीक
तगमा मिलै ये।
राँरी- बेटखौकी
कथी लेल करी आब
सोहर देहे साँझ दुनू
रोटी मिलै ये।
दूटा बात सुनियो जँ
राति भरि सुति ली
भिनसरमे मन तैयो
खनहन लगै ये।
टाका कैंचा के
लदने जाएत छथि
भने दरमाहा बिलहले
जाए ये। ❑

राग- 01

राग गायनमे छै राग वादनमे छै
राग जिनगीकेँ जीबा बचेबामे छै
राग भाषामे छै राग माटियोमे छै
राग मिथिलाकेर बेबहारोमे छै
रागेसँ ने वसुधा कुटुम्ब बनै छै।
राग संस्कारोमे छै संस्कृतियोमे छै
राग प्रेमोमे छै वातसल्योमे छै
राग अँगनोमे छै दुआरो पर छै
रागेसँ सौंसे जहान जीबैत छै।
किनको ठेलैसँ राग किनको खेलैसँ राग
किनको पढ़ऽसँ राग किनको गढ़ऽसँ राग
किनको मिलबऽसँ राग किनको फुटबऽसँ राग
किनको दोसरा के दुख देख हँसबासँ राग
सभ रागेकेँ खेलसँ रंगाएत रहै छै।
अहिना रागेसँ सौंसे, जहान जीबै छै।❑

दरद

रजनीक तमस मे
हेरायल अछि सुगंधा
शेफालिका बनि बनि
नितहुँ झरैत छथि
किनका छनि मतलब
किनकहु दरद सँ
बरखो बरखसँ ओ
अहिना जिबैत छथि।
कहैत छलखिन दाइ हमर
परमारथ लेल जिबैथ जे
कलजुगमे हुनकहि
अल्पायु होएत छनि
लोकेकेँ अपनौने कारण
सोगे मरइत छथि। ❑

लति

छोड़ब कोना अपन लति जे अछि बिगरल
आक धतूर लिखि अपना केँ बोधै छी।
छोड़नो ने छुटैत अछि बियैद अछि भारी
बिन कोनो गुणकेँ बेकारे सभकेँ शोधै छी।
काँकोरक बिल सन बिलो हम बनेलौंह
सेहो बिल छोड़ि केँ जत्र कुत्र दौड़ैत छी।
भिनसरसँ साँझ धरि चैन ने एको घड़ी
अकथ- अकारथ काजे जान प्राण हतै छी।
जिनगीक झोल-झाल झरतै ने जिनगी भरि
अहिना सेहन्ता पाछू सबके सब झेलै छी। ❑

कहा-सुनी

हम कहैत रही अहाँ सुनैत रही
अहिना जिनगीक मेला लगैत रहै
कखनहुँ अहाँ में हम
कखनहुँ हमरा में अहाँ
जिनगीक सेहन्ता अहिना पूरैत रहै।
बखेरा छै जिनगी में बहुतो मुदा
सुखोक एतै कोनो कमी ने छै
जिबैयौक बहुत छै रस्ता मुदा
अपना पर सदिखन भरोसा रहै।
बौएलहुँ बहुत चान आनऽ ले हम
आब बहुत भेलै आब बौखब कतेक
आब हमही चकोर अहीं हमर चान
संग अहिना जिनगी सम्हारैत रही। ❑

पैघ लोक

हमरहिसँ भोर आ
हमरहिसँ साँझ
फेर बिन मतलब
किएक छी फिरसान।
जे भाषण करथि
वएह राशन उघैथ
नोकरियो करैत
ठिकेदारियो करथि
पहिने अपनाकेँ देखी
तहन कहियौ बइमान।
कहीं एहनो भेलै
बिन रोपने होय धान
बिन पिघलेने लोहा
कोना बनतै समान
बिन हाथ पाएर डोलौने
नहि भेटत सम्मान।
देखलहुँ कतेक
बड़का-बड़का बुआर
दाँते टा चोख गिरथि
अपनहि ओ जाति

वएह दुनियाकेँ कहै छथि
हम छी महान।
फेर बिनु मतलब
किएक छी फिरिसान। ❑

जनमभूमि

राति जागल रही आ कि सूतल रही
कोना अंचोकेमे आबिओ गछारि लेलक
हम चिन्हबो नहि केलिए ओ छल के मुदा
हमरा गिरैसँ पहिनहि ओ सम्हारि लेलक।
अपना मऽने बलु हम अकाशे उड़ी
मुदा उड़बासँ पहिने कहाँ सोंचैत छियै
धरणी छै एखनहुँ एक मातरे अधार
आर दुनियामे के जे हँसि कोरा लेलक।
जनम जहिया लेलहुँ वएह देलैन्ह ओछान
ठेहुनियाँ देलौंहुँ भेटल हुनकहि ठेकान
जखन टेलहुक भेलहुँ देख अपन- विरान
सभकेँ एक्के समान ओ कोरा देलक।
जुआनीकेर खेल जखन धेलकै उड़ान
उड़ि उड़ि बैठलहुँ सभ हुनके मचान
प्रौढ़ भेलाह कियो वृद्ध भेलाह मुदा
सभ दिन मदोदरी बनि रखलनि धियान।
अन्तिमोमे वएह अपन कोरा देलक।
आइ गाछहीन, घासहीन, मृयमान भेल
जलहीन, मान हीन, छयमान भेल
चतुर्दिक छितरल छै प्लास्टिकक ढ़ेर

हम अपनेमे एखनहुँ
औझराएल छी
दुनिया देखू कतऽ से कतऽ
चैल गेलै
संस्कारो छोड़ल हम
अपन गाम केर
तैयो जिनगीमे सभकेर
अभाव भऽ गेलै
एहेन अभावकेँ के जनम देलक?
अपन घरेमे सभ देखि डूबैत गेलैथ
समाजिक सिनेह सभ भसिया गेलै
दियादोकेँ असौचक नहि पता चलैन
आब सौचो-असौचौ सभ निपता भेलै
एहि सरोकारकेँ के उधिया देलक?
मनुषक-मनुषता जँ एना
मरइत जेतै
समाजक सेहन्ता जँ जरति जेतै
तऽ हेतै कथी कमाकेँ लाखक लाख
आइ मायक स्थान
ई टाका लेलक। ❑

दुखहरणी

फेर आयब माते
कहि स्वस्थानं गच्छः
सुनि बिदा भेलीअम्बे
लेने लाखक- लाख
अनुनय-विनय
अपनहि सन्तानक।
रोग-दुख, दारिद्र केँ
नहि छै पारावार
रुप-गुण, भू-वैभव
केँ बड छै दरकार
दयानिधि बनि
मायकेर छोड़ि
के हरथिन
एहि भासैत संसार मे।
निःसन्तान कानि रहल
बाँझिन केर नाम धेने
बेटी बिन बियाहल
सोचि रहल माथ धेने
बेटाकेँ कनहा देने
बाप अछि बाट धेने

सभकेँ दुख हरथिन
दुखहरणी ई माता।
पुतौह आर बेटाक
माय बाबू सोझे मे
बिलखि रहल बात सुनि
भक्तिसँ शिक्त मने। ❑

कोना छी?

हलो जिनगी,
कोना छी?
बहुत नीक।
अहाँक व्रत उपवासक की हाल?
कहुना धेने छी।
फल फलहरी, ऊँचे सुनै छै!
शर्बतो पियब से मधुमेह गरोसने अछि।
माँछ-मौस छुबाक कहियो मन नहि भेल?
वैष्णवी आब जेना पार लगावैथ।
नेना सभक हाल?
सभ अपनामे आनन्द छथि।
भगवती सभकेँ भल करथुन।
हलो-हलो
बाजू ने हम सुनि रहल छी।
भगवती क झाँप-अँचरी!
एहि बेर नै द सकबैन!!! ❑

मिथिला

हम रोपऽ चाहैत छी
एक गोट पिपही
बनबऽ लेल गाछ
एहन गाछ जतै
ठाढ़ भऽ सकै
समस्त मैथिल
बन्धु-बान्धव,
माय-बहिन
अपन-आन संग
समस्त मानव।
एहि गाछ तर
ठाढ़ भऽ सकै
हमर अहाँक
पोषुआ माल-जाल
बरद, गाय, भैंस, बकरी
सभ पशु।
गाछक डाढ़ि पर
रहि सकै
सुग्गा, मेना, कौआ,
परबा, पौड़की

चहचहाएत रहै
कच बचिया सन
द्वेष हीन सिनेह संग
केहन सोहनगर रहैत
हमर गाछ सन मिथिला! ❑

असमयक बरखा

रिम झिम आसिन
अकछ सुआसिन
घर निपल आँगन
बिन निपले चिक्कन
पूजन शुरू अछि
भक्त बिनु सून अछि
इन्द्रदेव प्रसन्न छथि
कृषक मगन छथि।
हँसैत अछि खेत
नाचइत अछि धान
लागैत अछि आब
घर औतै धान।
नगर-नगर पानिसँ
पानि-पानि भेल
शासक प्रशासककेँ
फाँसल छै जान।
तीमन तरकारी
आनब भयकारी
चुलहो चौका पर
आफत अछि भारी।

जे करथि इन्द्रदेव
हुनकहि गुहारी
जीवट ओना कम नहि
हमर बिहारी। ❑

प्रपंच

सिखलहुँ ने कहियो
नकारब कोनो नीति कैँ
स्वीकारल नहि झूठ मुदा
सहऽ पड़ल झूठकेँ।
माछक शिकारी जेना
बोर दऽ फँसाबै माँछ
बोर दऽ दऽ तहिना आइ
परपंचमे फँसाबै छै।
फाँसल महजालमे जे
एक बेर बकलेलहा
नीति कैँ जिजिर सेहो
ओकरे ने बान्है छै।
मुँह पर महानुभाव
पीठ पाछू कूटभाव
अपन डिगडिगिया दोसराक
पीठ पर बजाबै छै।
कहुना मकर जाल से जँ
निकसल अभागल
सभ मकरजाल वला
दयाक राग गाबै छै।

जतेक जे चोर कामचोर
अछि जहान मे
सदति मुँहजोर भऽ अपन
चोरि केँ सराहै छै। ❑

सुरुजदेव

आइ फेर उगला हैँ
जरवैत सुरुजदेव
भोरेसँ बनल छथि
जेठक उग्रदेव।
हिनका के कहतैन
कनेक ताप धीम करियो
जौं मन हेतैन तऽ
बचौता मात्र इन्द्रदेव।
नितहुँ करैत छथि
मनमर्जी ई सभ
तैयो भयाकुल भय
पूजी हम मानि देव। ❑

टिटही टिहैक गेल

उमेर के ओसार पर
मनक दुआर पर
झिहिर झिहर बहैत
मनकेर बात संग
नेहक अमार पर
टिटही टिहैक गेल
घुरती ढलान पर।
चोंचा बनेलौं
सूत-सन-पात चीरि
मुँहक आहार दऽ
नेनाकेँ पोषलहुँ
पाँखि भेलै उड़ैत गेल
छुजनी अकास पर
बाट पर बाट जोहैत
आँखि अछि आश पर
टिटही टिहैक गेल
घुरती ढलान पर। ❑

सुहासिनी

ठोर पर लाली लसै
जीह्वा पर बिष बसै
आँखिक कमानि सँ
आँखिक माझि हँसै
हरित हास तरित त्रास
लेने गहण गहवर मे
मनुज मनकेँ सदैत
ओ अंग न्याससँ डँसै।
भामिनी विलासिनी
चन्द्रप्रभा सुहासिनी
विधुर विभुहीन पर
सदति धनुसँ हतै। ❑

लोके सन लोक

लिखैत रहब
जिनगीक
झूठ साँच
मुदित मन
छुधित मन
हीरा कि पाथर
सुधिजन परखता ।
शीत-वात, उष्ण-ताप
कजरी कि फगुआ
जिवैत छथि के नहि
सभ किछु ने किछु तऽ कहता।
रमता भोगी राग मे
योगी विराग मे
सोगमे सोगाएल लोक
सोगेक बात कहता।
चित्रकार लेल अपन जेना
भावक संसार छै
मनुषक चरित्र सेहो
भावेक संसार छै
तें अनन्त तर्क रहितो

ओ अपनहि बात कहता।
लोके सन लोक
सदैत, लोकक बीच रहता। ❑

गाछ छी छतनार

पसरल मोट पातर ठाढ़ि
पोषैत रहलहुँ नित्य
धरासँ लय सुधा सभ काल।
ताप, शीत, वारिध
केँ झेलैत सहल
कतेक कलेश
अहुँ सभ सहल
संग-संग
नहि जानि कष्ट अशेष।
आब सभ सक्षम भेलहुँ
रहलहुँ ने कियो अबोध
अपन रुचि रचना प्रकृतिसँ
करु अपन उन्मेष। ❑

उमेर

कतेक सहज छल
जिनगीक गीत ओ
नंगटे घुमैत छलहुँ
अ आ पढ़ैत छलहुँ
कखनहुँ हँसैत तऽ
कखनहुँ कनैत छलहुँ
माइक आँचर धऽ
कखनहुँ छिड़याएत छलहुँ।
चिंता ने फिकिर कोनो
सोना ने रुपा कोनो
माइ बहिनकेर
सोन सन बेटा छलहुँ।
कारी कारी घुमरल
केशकेर खोपा बान्हि
माथक कात मे
काजरक टीका काल
तामशे कखनहुँ तऽ
माटिए पर ओंघरैत छलहुँ।
अबिते किशोरबा
चंडाल बनि बान्है लागल

पोथी आ कागत
नेनाकेँ दवारै लागल
कतहु कोनो लोक मे
उत्तर गछारै लागल
नेनपन केँ धूरा आब
सहजे पड़ाए लागल।
चटसारसँ छुटैत
नेह छोहसँ टूटैत
भारी भरकम
कोठा बला स्कूल आ
कौलेज सभसँ जुड़ैत
मनुषक समुन्दर मे
हेरायल भुतियाएल सन
नहि जानि कोन-कोन
पापड़ सभ बेलैत
कनेकटा गाछक छाहैर
कहुनाक पेलहुँ।
बिपैतक पहाड़ तऽ
आब लगमे ठाढ़ भेल
एक दिस माइ बाबुक
ममता मरइत छल
दोसर दिस पेटक

आगि दहकै छल
अपना के मारि-मारि
की -की ने केलहुँ
लगैत अछि जिनगी
अनचिन्हारे गमेलहुँ। ❑

जिद जुनि करी

आशक बाट
जिनगीक ठाठ
उमेरक हाट
जखन उसरऽ लगै
जिद जुनि करी।
नेनाक जिद
जनानीक बिध
सिद्ध-असिद्ध
खेबाक काल
जिद जुनि करी।
घरसँ जतरा
कहै जे पतरा
देखकेँ खतरा
जिद जुनि करी।
फाटल अंगा
बिन ढ़ौए दरभंगा
गाछ सुरुँगा पर
चढ़बाक
जिद्द नहि करी।
रमकैत बरद

ठिठुरैत शरद
बैलगोवना मरदक
आगू जेबाक
जिद जुनि करी।
नवका जुत्ता
करिया कुत्ता
बिगरल पुत्ता सँ
दोस्ती करबाक
जिद जुनि करी।
करिकबा नाग
भादबक साग
बेसूरा राग लग
जेबाक जिद जुनि करी।
दियारिक फट्टका
बजारक उच्चका
फूहर चुट्टुका भीर
कखनहुँ जेबाक
जिद जुनि करी। ❑

माए

तोहर सिनेह आइ
बिसरलो न बिसरय
घरो- घरारी लैछो
आइयो तोरे नाम
हम तऽ सभ दिन
बिसरले रहलियो
तेँ ने तोहुँ हमर
बिसैर गेलें नाम।
बाध-बन आरि-धूर
कतहु रहैत छी
अकानैत रहैत अछि
एखनहुँ ई कान।
मुदा एगो बात छौ
कहियो नीक लगतौ
हमरोसँ हाल तऽ
खराप हेतौ तोहर
माँ गै, कोना बिसरबही
हमर तोँ नाम। ❑

शिक्षाक संसार

कौलेजमे पढ़ऽ लेल
बकरी सभ ऐबिये जैछै
किछु दिनमे गाइयो भैंस
सेहो पढ़ैले एबे करते ।
घासो बहने किछु
आरो लोक अबिते छै
श्रीमान् सभ आबि आबि
अहिना औंठा लगबैत रहतैथ।
चटिया नै आबौ पढ़ऽ
छात्रवृति भेटैत रहौ
अहिना अपन प्रांत मे
शिक्षाक रथ दौड़ैत रहतै।
भाषण बहुत होएछै
राजधानी पटना मे
हाकिम हुकुम बीच
बहसो होएते रहतै
जमीन पर उतड़ऽ मे
काज बड़ मोश्किल छै
बातक बतंगर अहिना
चलै छै चलइत रहतै।

अजगुत छै दुनियाँ
अपन शिक्षाक संसारकेँ
मूल काज छोड़ि-छाड़ि
बुझौएलमे लागल रहतै। ❑

बात तँ बुझियौ

सोझे डाढ़ि आब
चलै नहि नेता
हाकिम हुकुमकेर
बात तँ बुझियौ।
घरे- घरे घुमैछै
दलाल भाइ- बहिन बैन
एक- एक स्कीमकेर
बात तँ बुझियौ।
घरे-घरे बैठल छै
पढुआ सभ बड़काक
बिना कोनो कामकेँ
कोना जीबै छैक
सेहो तऽ बुझियौ।
स्कूल कौलेज आब
हाथीकेर दाँत छै
बोड विश्व- विद्यालयके
जे बुझबै से बुझियौ।
स्कूल कौलेज जेबाक
चटियाकेँ पलखति कहाँ
सरकार की सोचै छै

से अहाँ सभ बुझियौ।
खानगी पढ़ाइ केर
महिमा अनंत छै
नीक कि बेजाए
अहूँसभ त बुझियौ।
शिक्षक छथि आब
औंठासँ बान्हल
बकरी सन मेंमयैते
ओ रहता
की भविष हएत
नवका बिहार कैँ
जिनका बुझबाक अछि
से अपन बुझियौ। ❑

चौरचन

चौरचन केर पाबैन छै
अँगने-आँगन अरिपण छै
उगथिन सिनेहिया हमर चान
करबैन फलेसँ हुनकर धियान।
दहीक छाँछी संग
भरल मटकूरी छै
बाँसक डलिया में
फल फूल साजल छै
धूप दीप कलसामे लागल छै धियान
करबैन फलेसँ हुनकर धियान।
अँगना आइ हँसै छै
मधुर-मधुर मुस्कै छै
मरर एखन झाँपल छै
चान निकलब बाँकी छै
धियापुता तोड़ै छै छान
करबैन फलेसँ हुनकर ध्यान।
सभटा पावनिकेँ अपन-अपन खिस्सा छै
सभटा पावनिकेँ भावना मुदा एक्के छै
आसे बिसवाससँ सभ पुजै भगवान
करबै फलेसँ हुनकर धियान। ❑

आखिरी जन

ओ चान सन चमकै छथि
हम हाथमे फल नेने पूजै छी
ओ चलथि रश्मिक रथ पर
हम मात्र ठप्पा बनि बैठल छी।
ओ रश्मिक जोगारमे लागल
सगरो गदमिशान करथि
हम अपन खेतमे लागनि धेने
आखरी जन बनल बैठल छी। ❑

छाँहक बिसवास

हे हम देखने छी
पिपहीसँ अंकुड़ैत
ताम्रवर्ण तनुक
टुस्सीकेँ निकलैत
फेर हरियर होएत
पात संग ऊपर उठैत
मस्तूल पर छोट सन
टुस्सीसँ निकसैत डाढ़िकेँ।
हम बचौने छी अहाँकेँ
लपलपैत पाठी, छागर आ
ओकर माइ केर जी सँ
ओहार दऽ, काँट दऽ
कोरने छी जड़ि
पटौने छी पानि
मनक मनसूबे सन
पोषणे छी पालने छी
आब तऽ बढ़िकेँ
फल फूलसँ भरि गेलों
मुदा हमरा कहाँ चाही
अहाँक फल वा कि

फूलक सुरभित सुवास।
हमरा बस चाही
ठाढ़ रहबा लेल
छाँहक बिसवास
मधुर बोलक आश
पानि, पाथर, शीत सँ
उगरास !!! ❑

अगम बाट

भऽ गेलै निशभैर राति
बाट छलै अगम अथाह
जतराक सभ ठाठ
रहि गेलै पसरलै।
चढ़ैत पहाड़ आ की
उतरैत पहाड़ संग
जिनगीक दुभर बाट
कटने नहि कटलै।
पाएरमे बेमाय आ
तरबाकेर फोंका
कहियो ने केकरो सँ
घसने- घसेलै।
रहलै गाम घर
चाहे परदेश में
रहितो संसारे में
संसार नै बुझलकै
जिनगीक बाट आइ
अझोके जे हेठ भेलै
सगरो अन्हार कारी
राति भऽ पसरलै। ❑

राग-विराग

रागसँ विराग
कामसँ निष्काम
आशक्तिसँ निराशक्ति
साकारसँ निराकार
दिश जाएब
कहबामे जतेक असान छै
जिनगीमे उतारब
ओतबे कठिन
तें योग आ योगेश्वर
नटवर आ गिरधर
रथवाह आ राघव
मुरलीधर आ चक्रधर
माखनचोर आ चितचोर
मात्र एक्केटा भेलाह
एक्केटा रहताह
तेँ लीलाधर योग -योगेश्वर। ❑

पूजाक महत्ता

बऽध लागल जकाँ
हम बकुएल छी
मन्दिर पर बजैत
धुनिसँ लजाएल छी
राति भगवानोकेँ जनम तऽ
हेबे करतनि
शंख, घरियाल या घरिघंटो बजतनि
मुदा पूजा, पुजेगरी, बरैतिन केँ साँच
मन्दिरक सजावैटमे हेराएले रहतनि।
पूजाक महत्ता हेराएल जाइत छै
पर्दा आ झार बढ़ल जाइ छै। ❑

सिनेहक आँगुर

हम तऽ नेहक आँगुर पकड़ने रही
अहाँ छोड़ाकेँ जे गेलहुँ से एलहुँ कहाँ
हम तऽ नेहक...
आश करब कतहुसँ ने गलती छलै
अहाँ एनाभऽ छलब से बुझलयै कहाँ।
हम तऽ नेहक...
राति- दिन हम कखनहुँ ने कहियो देखल
अहाँ संग छोड़ि भागब से बुझलयै कहाँ।
हम तऽ नेहक...
सभ दिन आब हमहीं की दुखे सहब
बाट नवका धऽ लेलहुँ से बुझलयै अहाँ।
हम तऽ नेहक आँगुर पकड़ने रही
अहाँ छोड़ाकेँ जे गेलहुँ से एलहुँ कहाँ। ❑

दाँत बीच जीभे सन

हम की जानी गुण वा रसकेँ,
अलंकार किलकारी सन
छंद, ध्वनि, वक्रोक्ति नहि जानी
भाव, अनुभाव तरकारी सन।
महाकाव्यकेर मरम नहि जानी
खण्डकाव्य तितपड़ूड़ी सन
मुक्तककेँ मरम की बुझबै
सभ धन बुझु सरकारी सन।
नाटक, ताटक और एकांकी
सड़क छाप नुक्कड़ बनलै
ले बलैया कथाक कथकिया
लिखै छथि घसकटिया सन।
हम की बुझबै उपन्यासकेँ
कथा पिहानीक मरम की छै
नवका पढ़ुआ बिन पढ़ने बूझै
सभटा शास्त्र कालिदसवे सन।
रगैर -रुगैर के पढ़लहुँ किछु जे
तैसँ कोना आब लगतै पार
लाम-लम्फाकेर जुगमे जीबी
बत्तीस दाँत बीच जीभे सन। ❑

हे हरि चरण कमल बलिहारी

हाथी देखल घोड़ा देखल
देखल महल बखारी
माछी देहसँ घी निकालि
देखल भरैत हम टारी
हे हरि चरण कमल बलिहारी।
फगुआ, झूला, राग-रागिनी
सभटा पाइयक तर मे
सुदिक सुदिसँ घर चलइत छनि
मन छैन झामर कारी
हे हरि चरण कमल बलिहारी।
अपनहिटा ओ बात सुनै छथि
अनकर बात सभ झुठ्ठे
झूठहि हुनक माथ सिरहाना
झूठे सुतैन गोरथारी
हे हरि चरण कमल बलिहारी।
नीक लगैत छनि सभ काज मे
नोंकसी सदति लगौनाए
अपनहि केनहार अपनहि खेनहार
चतुर चलाक गिरधारी
हे हरि, चरण कमल गिरधारी। ❑

मटरा माय

चौकैठ टपैत देखलहुँ
मटरा माय ठाढ़ छेली
अपन बेगरते
समयसँ बेहाल छेली।
सोझा नहि कहियो
आएल छली एना
मुड़ी झुकौने
बेवस कठुआएल छेली।
बाढ़िक मारि सँ
तिल-मिलाइत खुट्टा खाम्ह
देखिकेँ कनेक पहिले
हमहुँ आएल छलहुँ।
गमछा पहिरने
पीठ पर झोड़ी टंगने
नोकरी पर जाए लेल
हम बिदा भेल छलहुँ।
भाड़ाक टाका राखि
शेष टाका लऽकेँ दैत
आगू बढ़बाक लेल
डेग हम बढ़ेलहुँ।
थमकल मटराक माइक

डेग देखि कहलयैन
आरो कोनो दिक्कत तऽ
बौआ मायकेँ कहबैन।
अपन वशमे की
किनकहु किछु रहलैन
बिधाताक लाथ धरा
आगाँ बढ़ि गेलहुँ।
घर बला जाबत छलै
पुछनहार बहत्तैर छलै
आइ अपन बेटो नहि
अपन भऽकेँ रहलै।
गुणमन्ती कनियाँक
चपेटमे फँसि मटरा
जनम देनिहारियोकेँ
साफे बिसैर देलकै।
मुँह आ करम बले
अँगने -अँगने कूटि-पीस
आइयो मटरा माय
मटरे लेल जीबैत छै।
ओकरा भरोसा छै
मटरा हमर घुमि औत
अँगनामे फेर सँ
सुखक बसात संग
अतमा सिहेतै। ❑

बाढ़ि- 01

टुटि गेलै हूबा
पाथर सन कलेजा
कतेको भहैर गेलै
देखि के रखवारी
गोपलखा सिहैर गेलै।
टुटलै कहाँ बान्ह
टुटि गेलै हुबा
कमाय कत्ता बरषक
छनेमे बिलहि गेलै।
बाबुक लहास भेटलै
पाँच दिन पर पड़ल
उजरल बथान पर
बेथा पसरि गेलै।
आगि कखनहुँ
पानि कखनहुँ
बिजलोका
काल कखनहुँ
सभ दिन अहिना जँ होइत रहतै
दीन-हीन लोक सदैत
अहिना कनैत रहतै। ❑

बाढ़ि- 02

सड़क तनल छै
भले गत्तर गत्तर
टुटल छै
तहिना खंघरल डीह
पर भुखलो पेट
लाज बचौने
मनुष ठाढ़ छै।
गाछ सभ गिरल छै
जड़ि तक खंघरल छै
गाछे सन ऊखरल लोक
भीख पर पेट
भरैत छै।
देखिनिहार बान्हपर
गाड़ीमे बैठल
हाथसँ फरहीक झुनझुन्ना
सरधुआ साड़ी,
ओहने धोती बढ़बैत किछु
झोंझसन हाथ मे
पकड़ऽबैत
अचानक रफ्तार धऽ लैत अछि।

मनुष, प्रकृत, प्रशासन आ अखबार केर
खेलौना बनल लोक
जिवैतौ मुइल अछि
अपमानित, अवहेलित
छुद्र लाभ हेतु दौड़ैत सभ
आए पशुवत बनल अछि। ❑

बाढ़ि- 03

गेलै पानि गर गोटिया दऽकेँ
खेत पथारकेँ मटिया कऽ।
टाट फरक उधियैते गेलै
बच्चा बुदरुक कैनते रहलै
जाँत-चुलहा गेलै डुमाकेँ।
चौर-दालि घर पड़ले रहलै
दूध दही सिक्के पर सड़लै
अँगना घरकेँ गेलै कनाकेँ।
बाबा बिदेसर तऽ बचिये गेला
नै जानि कोन धियानमे छेला
ठाढ़ छलै जतेक कठघारा
लऽ गेलै सभ बाढ़ि भसियाकेँ।
हर हर बम बम फेर शुरु छै
सौनक महिमा सभ जनैत अछि
फेर की हाएत बऽबे ने बुझथिन्ह
धेने छी हम तें गसियाकेँ.! ❑

बाढ़ि- 04

हाथ डोलाबैत नेता एला
देख' हमर फजीहैत
एक्को बोतल पानि
ने जुड़लैन
देलाह खूब नसीहैत।
ओहिना भारखमी अधिकारी
फुटहोटा नहि जुड़लैन
जेकर बहलै, जेकर डुमलै
जाने जे जेना जिलै।
बान्ह बनौनहार कैँ पों बारह
चित-पट दुनू एक्के
काल्हि कहलकै सभ ठीक छै
रातियेमे की भेलै?
फेर बनौतै फेरो टुटतै
मरते अहिना जनता
रंग बिरंगा झंडा कारण
अहिना जनता मरता।
दर-दलाली चलबे करतै
बजतै करुणाक डंका
जे मुरुख भपडाह उठेता
घरे बनतैन लंका। ❑

अपना लेल

सभ काटै छै गाछ बिरिछ
लगबै बेर नहि कोइ
पोखरि-झांखैर भरि भरि
घर बनबै सभ कोइ।
कहियो झेली बाढ़ि सभ
कहियो सभ सुखार
बाढ़िसँ कहियो मरी
कहियो मरी बुखार।
बान्ह- बान्हि हर्षित रही
सुतलहुँ पलंग ओछाए
बान्ह पर मनमानी करी
सरकारकेँ दियौ गारि।
बाढ़ि नियंत्रणमे करै
काम सभ अपने लोक
कोनो विदेशी कहाँ रहल
चोर सभ अपने लोक।
गाम छोड़ि सभ भेल छी
अपने-आपमे मस्त
कोइ मरै कोइ डुबि जाय
अपने लेल सभ व्यस्त। ❑

अन्तर्यामी मन

कोनो ध्वनि
कोनो शब्द नहि
इजोत नहि
अन्हार नहि
हवा नहि
पानि नहि
तैयो कोना बुझि
जाएत अछि अहाँक मन
हमर अभाव, आनन्द,
आश, निरास
साँच-झूठ
अहाँक अन्तर्यामी मन..! ❑

सपना

जिनगीक सपना
सपनाक जिनगी
सुनबामे एक सन
होएतहु एक नहि
होएत छै।
जिनगीक सपना
धरतीसँ आकाश तक
कखनहुँ पसरैत तऽ
कखनहुँ छिजैत
जिनगीक बाट
बनबति-मेटवति
मनुषक आश- निराश
बनि बढ़ैत छै
मुदा
सपनाक ज़िन्दगी
मात्र सपने तक
साँस लऽ पबैत छै। ❑

स्व

नाना काज ताल दैत छल
धेने नाना रंग
अन्तर मन अहुछिया दइ छल
छिन-छिन बदलै रंग।
किनकहु कहाँ
पलखति छै देखताह
अहाँक भितुरका मन
सभ अछि अपन
सुतार में लागल
अपनहिसँ छनि संग।
संग रहितहुँ
असंग बनल सभ
सभक स्व सबरंग
करैत रहू सदिखन
सद् इच्छा
रहैत सदति निःसंग। ❑

अपन मैथिली

मिथिलाक अमर भूमि
जनम लेल ताहि भूमि
भेटय ने कतौ अपन
मैथिल मीठ बोलिया।
आसाम, बंगाल गेलौं
भदोही, पंजाब गेलौं
महाराष्ट्र, गुजरात कि
केरल कर्नाटक गेलौं
मैथिली छोड़ि सभ
भेलहुँ बहु बोलिया।
भेष नहि भाषा नहि
माटि नहि नाता नहि
मिथिला-मैथिल केर
पहिचान नेहक बोलिया।
जागल सुतल रही
थाकल विकल रही
कोइली सन बोल सँ
बनू मीठ बोलिया। ❑

रितैत जिनगी

दिन बितल
मास बितल
सालक साल
बितैत गेल।

राति बितल
दिनो बितल
जिनगी अहिना
बितैत गेल।

कतेक फगुआ
चैत बितल
शीत घाम
बितैत गेल।

नेनपन जुआनी संग
नीक बेजाए
बितैत गेल
हृदयकेर सुभाव कुभाव
जिनगीक अस्ताचल दिस
सनैह-सनैह बढ़ैत गेल। ❑

माँ

गै माँ !
जखन तोँ मऽन पड़ै छेंं
मनमे उमड़ऽ लगैये
करिकबा मेघ
अपन आँचरसँ झँपने
हमर दुनु आँखि
बिजलोकाक तड़तड़ाइत
कड़कड़ाइत क्रोधातुर
आँखिसँ बचाबैत
जित्ताजिनगी
थथमारिकेँ रखलें।
तोरा छोड़ि के अछि
थथमारऽ बाली?
सभके अपन-अपन
सन्तान छै थथमारऽ लेल
हमर तऽ तूहीं छलें
तूहीं रहमे
और ककरा कहबै
गै माँ??? ❑

अपन आँगन

जुनि देश परदेशक बात करू
घर, आँगन-ओलतीक बात करू
पितियौत-सतौतक बात करू
टूटल-फूटल घर-घैल्ची संग
मायक छातीकेर बात करू!
सतौत बाँटि घर छोड़ि गेला
अँगना घर बेपर्द छोड़ि गेला
पितियोत बहुत दया केलाह
गोसौअन घर पूजऽ छोड़ि गेलाह
एहि उजरैत डीहक पीपर मादे
किछु लाज विचारक बात करू!
महल बनेलहुँ मुम्बई में
अगबे चमकौआ पाथर सँ
माय टाँग तोरि सख पूरा कऽ
आइ हाँफि रहल छथि गामें में
एहि हाँफथि गामक मादें तऽ
हाँफथि मैयक किछु बात करू!
भाइ, भातिज, भौजकेँ छोड़िगेलौं
भतिजियोसँ मुँह मोड़ि गेलौंहु
पित्ती, पिसी तऽ दुरक बात

हाय हेल्लोमे अहाँ डुबि गेलहुँ
आइ भतीजीक उपलब्धि पर
देखौआ सिनेहकेर बात करू।
छोटका बौआ आएल छला
घर द्वार देखिकेँ गुम छला
फाटल देवाल, चार लटकल
सभ देख सुनिकेँ घुमि गेलाह
शहरमे साइत घर किनताह
से गामक खेत बाँटि बेचताह
एहि गाम पलायन मादे तऽ
बैठ पलायनक बात करू।
करजा कऽकेँ पढेबा लेल
जे भाइ काल्हिधरि ठाढ़ छला
ओइ भाइक उमड़ैत नेहक मादे
किछु नेह - नाताकेर बात करू। ❑

गुलमोहर

गुलमोहर सन होएतहुँ
लालटरेस भकरार
नेनाकेर छाती लगितहुँ
हर्षित पुलकित गात
निज हृदय सिहैतौं।
झुकि झुकि छुबितौं माथ
आशीषे नहबितौं
दुधिया दाँतक हास संगे
भरिपोख नहैतहुँ।
अछि नहि बाँचल रूप
मुदा मन ममताक बारी
बहुत जरेलाह सुरुज
मुदा मन नहि अछि कारी
बँटितहुँ नेहक नीर
सदति हम हर्ष मनैतहुँ। ❑

छिड़ियाइत मर्रा

तौलैत छी पाँखि
उड़बाक आश
निराशमे उड़ियैत
निर्निमेष तकैत
कखनहुँकेँ सुनैत
जागलोमे सुतल
अनभुआर सन बुनैत
हौथरी, मौनी, डलिया,
छवनी, छिट्टा, पथिया
मुदा हौथरियोक
मर्रा बेर-बेर बान्हलो पर
जखन छिड़िया-बितिया
जाएत अछि
तऽ निराशक अन्हरियाक
गहनसँ गहनतम
गिरि गहवरमे मुर्छित भए
जिनगीक साँचकेर आगिमे जरैत
मनुषक कटुताक शिकार बनि
अपन, आन, आस-पड़ोस
के संगे मात्र भोक्ता होएतो
अचानक द्रष्टा बनि जाए छी!!! ❑

छतनार गाछ

चहुँ दिस छलै छतनार गाछ
फल फूलसँ लादल
बाट बटोही स्त्री पुरुष केर
मन सदति उछाहल
नव-नव सोच
नव रीति जिनगीकेर
नव-नव सूत्र बनाओल
सुजन-समाज छोड़ि
पाथरक जंगल लगाओल।
एक बुन्न केर आश ने कतहु
माथ बचाबक छाँह
भाषा-भाब बेबहार सहेता
सब पहिलेसँ धोखरल।
अगम भेल पहिचान
मैथिल-मैथिल केँ ने चीन्हथि
बजै कचराही बैन भाव संग जिनगी
लगै जेना भखरल। ❑

नवका शिक्षा- 01

की भऽ गेलै
कोन हवा एलै
फारमो भरैकेँ केकरो
पलखति नहि छै
कोइ गंगा नहाए
कोइ जमुना नहाए
कोइ खत्तेक पानि में
उभ-चुभ करै।
विधाता ढरल छै
नवतुरिया पर एखन
जेना मन हौ
जे मन हौ
सौंसे दुनियाँ
कमाय ले तऽ
तोरे ले छौ।
चपरासियोक लाइन मे
छै एम.ए.लागल
पात्थरो समेटै ले
बी.ए.लागल।
बिहारक धुजा

अहिना उड़ति रहौ
परीक्षाफल अस्सी सँ
सौ भऽ जेतै
जन गणकेर मन
आर हर्षित हेतै। ❑

नवारम्भ

हम रोकलहुँ सदैत
अहाँ रुकलहुँ कहाँ
अपन मनक गुलामीमे
बाझल रहलहुँ
अचतेने -पचतेने ने
जिनगी चलै
डाँर बान्हब तऽआऊ
किछ नव काज करी।
जिनगीमे छै बड हुज्जैत मुदा
उपाइयोक कोनो कमी कहाँ छै
चालि छोडू गरबकेर
ई छोड़त कहाँ
बाट करमक अहाँ
एखनहुँ तऽ धरू। ❑

हमरामे हमर गाम- 1

मनक गाछी मे
आइ मचान पर बैठल
अँखियाइस रहल छी
अपन कलमक
बमै, किसुनभोग,
सपेता, कलकतिया,
नगड़ा, फैजली
एकसँ एक
रंग-बिरंगक आम
गाछीक उतरबरिया
हत्ता पर बड़का-बड़का
पियर, सिनुरिया सरहीक
घौरछे- घौरछा
माथ पर झुकल सिनेह,
बसातक सिहकी सँ
झफलाइत आँखि आ
लाल -पियर झर-झड़ाइत
सुपक सरही।
दुपहरमे जखन पैघसभ
अराम करैत छलाह

हम सभ सतघारा मे
खेलाइत रही पितुझियाक
गोटी, झूठ, बइमान।
कलम में आबि बैठैत छलथि
बाबा, काका, भैया,
बुढ़िया दादी, ललिया काकी,
नाना गामवाली भौजी,
बहिन
खोधली आ जालीसँ
दैत छलयनि, खुआबैत छलियैन
आनन्दसँ मधुआएल आम।
आन्तरिक सिनेहक
भेटैत छल आशीष,
अपन केश उजारि
दादीसभ दैत छलीह
अपन औरदाक आशीष।
मुदा साँझकेँ जखन
जाला रहैत छलै खाली
वा अधभर तऽ!!!
बड नीक छल ओ संसार
कहाँ छलै कोनो जाति,
ऊँच-नीच, सबहक कोरा, कान्ह

हमरा सभ लेल सदैत
रहै छलै अकुलाएत।
दादी सभक घमाएन
अँचराक सुवास तर
मन होइत अछि मुँह झाँपि
कोरामे माथ देने
सुतल रही
सपनाएत रही
खिलखिलाइत रही। ❑

हमरामे हमर गाम- 2

हमरामे एखनहुँ अछि
अपन गामक पोखरि-इनार
ब्रह्मस्थान, बिसहारा थान
पुरना मन्दिर, नवका मन्दिर
बड़का-छोटका नव पुरान
हनुमानजीक मन्दिर
हमरा बुझल अछि अपन
गामक सिमान
अपन पंचायतक चौहद्दी
हमरा देखल अछि
खिरिया-पुरिया गाछ
जतए बिछऽ जाइ छलहुँ
नेनामे टिफिन काल
खिरियाक पीयर-पीयर
दुधाएल फर
हमरा देखल अछि
कुम्हैन भौजिक घर
छाँछी, मटकूरी, घैल, बसनीसँ
भरल रहै छलै दूरा-दरबज्जा,
चलइत रहै छलै चाक

नाचइत रहैत छलै
चाक पर राखल
माटिक थुम्हा
आ बौका भैयाक मुड़ी
बाँसक दुहथ्थीक
संगे बनै छलै
दीप, लागैन, पुरहर
पातिल, कोसिया,
सभ किछु चाके पर
कोनो जोगी जकाँ
ध्यान लगौने
बौका भैया गढ़इत रहै छलथि
डोरा लऽ काटि-काटि
भरि दइ छलखिन दुआर, ओसार।
हमरा देखल अछि
जद्दू भैयाक दलान,
मुँगरीसँ तर-तर फुटइत
मखान, किड़्डी मखानक
सोन्हगर सुआद,
गमछामे बान्हल
बहिनक हिस्सा, बाबुक हिस्सा
आ अपन हिस्साक मखान।

ब्रह्मस्थानक भूत प्रेत सन
बड़का-बड़का जामुनक गाछ
हवा में झहरैत जामुन
बीछैत जाऊ, मुदा ओतऽ
खेबै नहि
ब्रह्मबाबा बिगैर जेता।
बरहम बबाक घोड़ा
अपने मने घुमैत छथिन्ह।
एखनहुँ छै नहर पोखरिपर
बर पिपरक गाछ
बरऽक गाछकेँ बड़का-बड़का जट्टा
जट्टा पकड़ि एखनहुँ
मन होएत अछि
झुलइत रही, झुलइत रही,
झुलैत रही। ❑

करी कोन योग

की कही किनका
करी कोन योग।
गाम पर टाट नहि
नगरमे ठाठ।
गाममे बुड़हा-बुड़ही
तोरथि साग
नगरमे बहुरिया
लगबै आगि।
खेत-पथार अछि
पाड़इत ठोहि
नगरमे नुनु
गिरबै देखौआ नोर।
अपन आम
ओगरबाहक नाम
नगरमे चाटै
कीनि-कीनि आम।
गामक सभकिछु
माटिक मोल
नगरक नाम
लगै अनमोल।
की कही किनका
करी कोन योग? ❑

गाय

कृषक जिनगीक महा गाथाक
अनमोल धरोहरि
छथि, हमर माय
हँ, हँ, हमर माए
पयस्विनी माय।

जन्मसँ मृत्यु पर्यन्त
हमर आहार, पोषण,
रक्षण करैत जिनगीक
अन्तिम घड़ी धरि
संग देनिहारि।
दूध, दही, घी, मक्खन, मलाइ,
गोबर आ अपन सँततिसँ
मनुषकेँ श्रीवृद्धि
केनिहारि हमर माय
आइ अपनहि संतान सँ
अपमानित होएत
आँगन-दुआर सँ
बहटारल जा रहल छथि।
हम मुँह मोरि रहल छी

अपन संस्कार, संस्कृति
परम्परा, पारिवारिक,
सामाजिक दायित्व सँ।
घरक आय वृद्धि,
आधुनिक बजारबाद,
वैयक्तिक स्पर्धा
वा कोन कारण जे
हम अपन संस्कारकेँ
मारने जा रहल छी?? ❑

राग- 02

भाषा अछि भावक संवाहिका
किनकहु कुलक मरौसी नहि
जाति, धर्मसँ बाँन्हि जे देखथि
हुनका सन पैघ अपरोजक नहि।
दूधक ममता पूत बिन बुझने
डेगे- डेग बकटेंट करै
अपने दही टा मिठगर जिनकर
ओ की मायक दुख बुझता।
जहिना सबहक जनक नन्दनी
ओहने मैथिली भाषा थिक
अवध, जनकपुर वा हो मधुपुर
जतए जे बाजथि मैथिल थिक।
आम, लताम, मखान, पान सँ
जहिना हमरा अछि अनुराग
ओहिना मिथिला, मैथिली संगे
अपन भूमिसँ राखी राग। ❑

मनक अकास

मनक अकास
जाहि अकासकेँ
बेर-बेर सजेलहुँ।
नव-नव इन्द्रधनुष
बनइत रहल
बिगरइत रहल
विपत्तिक मेघ
उमरइत रहल
बरसइत रहल
तितइत तन- मन
शीत, चोटसँ
कठुआइत,चोटाइत
कोनो गाछ,
कोनो टाट,
कोनो चार,
कोनो तरहेँ सटौने पीठ
अँखियासैत रहलहुँ
जिनगीक ओ खोपरी
ओ बाट जेतए
बिलमि सकी

घड़ी, पहर, दिन, राति
आ कहि सकी
ई हमर अकास छी
ओ अकास कतऽ अछि? ❑

मकर जाल

विविध विषय केर मकर जालमे
मऽन सदति औनाइत रहै ये
क्यो किनको सुनता नहि कखनो
अपनहि ताले नाचि रहल ये।
किनकहु मनक आन के जानत
की बजता आ करता की ओ
करनी- कथनीक खाधि देखि कऽ
मन सदति कलहन्त रहै ये।
क्यो कश्मीरक बात उखारै
क्यो मणिपुरक बात उठाबे
क्यो तिब्बत तँ क्यो चीनकेँ
रंग-रंग केर बात उछालथि।
विविध विषय केर मकर जालमे
मऽन सदति औनाइत रहैए।
आँगनसँ बाहर धरि सगरो
एकहि राग-रंग अछि घोरल
स्वारथ रथपर चढ़ि-चढ़ि सभ कोइ
गगन बिहार करैत रहैए
विविध विषय केर मकर जालमे
मन सदति औनाइत रहैए। ❑

छोट-पैघ

पीतै जहर तऽ मरबे करतै
गरतै काँट तऽ दुखेबे करतै।
बहुत दुख छै दुनियाँमे तैयो
लोक बिना की खाली रहतै।
पैघहा बेटा लेल देश कहाँ छै
देश ले हमरहि नेना मरतै।
कमजोरहि सभ सब दिन हारै
बलगरहा की हारबो करतै।
नेना-भुटका कहल नहि मानत
अपटी खेतमे मारल जेतै। ❑

जिनगी- 01

जनमहि सँ
खोंटैत रहल
कोंढि, फूल, पातकेँ
पुनघैत अंकुराकेँ
लूटलक ओ जिनगी।
नेनासन नोचि-नोचि
फेकैत रहल
मनुख-माल, खेतकेँ
भूखल -पियासलकेँ
अधमौगैत कऽ जिनगी।
अगराति रहल सदति ओ
देखि -देखि घिरणी सन
करमक बाट पर
रेंगइत कठ जिनगी।
सज्जनसँ काज कोन
दुर्जनसँ संघति
देश बनल एखनहुँ
एजेण्डाक जिनगी
मरइत मनुखकेँ
पायक कोरामिनसँ
नितहुँ कीनि-कीनि
हर्षित ओकर जिनगी। ❑

जिनगी- 02

गै जिनगी
देखल तोहर कत रुप
खन हँसाबे खन कनाबे
खने बनाबें भूप
गै जिनगी...
देखल तोहर कत रुप।
करिया खुट खुट देहमे देखल उमरति प्रेमक सागर
नेना भुटका पीबि रहल अछि
भरि- भरि नेहक गागर
हम पेखल अदभुत रुप
गै जिनगी...
देखल तोहर कत रूप।
हरक लागनि धेने चनरा
टप-टप चूबैत घाम
बाम-दहीन सिरौर निघारति
लागल अछि अविराम
करमक देखल अकथ सरुप
गै जिनगी...
देखल तोहर कत रुप।
बौक, बहीर, नचार बोल बिनु

कियो नयन बिनु निर्बल
हाथहीन कियो टाँगहीन भेल
विकट जिनगी झेलै
सोंचय जगतक रुप
गै जिनगी...
देखल तोहर कत रुप।
किन्नर-किन्नरि सन
रुप जिनक छनि
मनसँ ओहने कारी
पर धन लोभी
अहंकार सिरोमणि
सभ जनकेर भयकारी
गे जिनगी देखल तोहर कत रुप। ❑

नवका शिक्षा- 02

जखन हल्ले केला भरिसँ
घोघ भरै छै
तखन काज करवाक जरूरति
की छै।
परीक्षे देलासँ जँ पास भऽ जाय छै
तखन पढै-लिखैकेँ जरूरति की छै।
जखन हल्ले केलासँ...
गुरुजी लगाबैथ अँगुठा नित्तो
चटिया बलु नित घुमौथ कतौ
साले- साल नेना पास हेबे करतै
माय-बापोकेँ देखबाक जरूरति की छै।
जखन हल्ले केलासँ...
चटिया पढौ कि सिनेमा देखौ
साइकिल पोषाक तऽ मिलबे करतै
गुरुजी बैठल बाट जोहैत रहौथ
चटियाकेँ शिक्षाक जरूरति की छै।
जखन हल्ले केलासँ...
सुरसा बनल छै आइ शिक्षाक दुनिया
खानापूरी करै में छै लागल सद्-गुणिया
लाखों लाखक जिनगी अन्हार भऽ गेलै

की आगुओ अहिना होएते रहतै
ई देखवाक केकरो पलखति कहाँ छै।
जखन हल्ले केलासँ...। ❑

बहिन

काल्हि बहिन आएल छली
हँसैत
मुँह, कान, नाक, आँखि
हाथ, पैर, तन, मन,
हर्षित, पुलकित
छोट भाइ (बौआ)सँ भेंट
कऽ भाव विभोर।
दहो बहो नोरसँ
जुड़बति रहल भाइक
माथ, छाती, घर, आँगन।
कतेक बरख पर
हँसइत, कानइत भाइ बहिन
भऽ गेल छल नेना,
हँसै छलनि ओसार पर
ठाढ़ भेल बहिनकेर भौज,
भातिज, भतीजी,
गांम नानी बला नाति।
सबकेँ हँसाबइत, खुआबइत,
कहैत, सुनैत, सुख-दुख,
बेटी- बेटा, पोता-पोती,

बियाह-दुरामन, भोज-भात,
गाम-घर, खेत-खरिहान,
देश-विदेश होएत-होएत
भऽ गेलैन निशभैर राति,
कनेक अराम।
भिनसर भेलै
बहिनकेँ जेबाक छनि
बेटा काल्हि चिन्नै जेतनि
भाइ नोकरी पर
गायिक गोबरसँ
ओसार नीपि
बहिन अपन जनमडीहकेँ
जुड़ाक भाइ लेल
लोटा, गिलास पखारि
पीड़ही-पानि दैत
थारी परोसि बैठल अछि।
भाइ चुप
बहिन चुप
किछु पघील रहल छै
हँ, मुदा निःशब्द! ❑

कविता

अकाससँ नहि अबैत छै कविता
धरतीसँ सेहो नहि जनमै छै
हवा कि पानिसँ सेहो
नहि बनैत छै कविता
भावानुभूतिक असह्य
संवेदनासँ निकसै छै कविता।
छने-छन जीबइत, तिल-तिल मरैत
अनदेखार, अनचिन्हार
खिलखिलाएत अन्हारक
गहन-गहवरसँ निकसै छै कविता।
जखन जिनगी मकरंदक
सुवाससँ महमहाएत छै
मन गाबऽ लगै छै फाग
तखन निकसै छै कविता।
भाग पर अभागक
जखन काल घीच दइ छै
डरीर
जखन कतहुसँ कोनो
नहि देखाएत छै आशक किरिण
तिलमिलाएत, घिसयाएत
कुहरैत मनसँ निकसै छै कविता। ❑

कहू हम झूठ कहै छी?

अल्ल बल्लमे लागिकेँ छोड़ल
अप्पन अप्पन काम
पाप -पुण्य अगरा पिछड़ामे
बिसरल अप्पन गाम।
कहु हम झूठ कहै छी
हरदम झखैत रहै छी।
केकरा के आए मोजर दैछै
अपनेमे सभ टेंढ़
कनफुस्कीसँ भरल रहै छै
सदिखन सबहक घेघ
एहि प्रकारेँ कोना निबहतै
गामक मान- समान।
कहु हम झूठ कहै छी
हरदम झखैत रहै छी।
आँगन घर उजार लगै छै
ओसरापर जनमल घास
तू-तू खढ़ खपड़ा गिरै छै
ओहिना तुऐत दलान
कहू कोनो झूठ कहै छी
हरदम झखैत रहै छी।

हरखो घर पेटकुनिया देलकै
पित्ती ओकर आएल कहैले,
टाटो-फरक देवाड़ खा लेलकै
चारो आब तँ गिरबे करतै
देखकेँ हाल ठकुएल रहै छी।
कहू कोनो झूठ कहै छी
हरदम झखैत रहै छी। ❑

❑❑❑
❑❑
❑

Notes